Rs. 10/-

Readers' Club Bulletin

पाठक मंच बुलेटिन

Vol. 19, No. 9, September 2014

nbt.india
एकः सूते सकलम्

Readers' Club Bulletin
पाठक मंच बुलेटिन

Vol. 19, No. 9, September 2014 **वर्ष 19, अंक 9, सितम्बर 2014**

Editor / संपादक
Manas Ranjan Mahapatra
मानस रंजन महापात्र

Assistant Editors / सहायक संपादकगण
Deepak Kumar Gupta
दीपक कुमार गुप्ता

Surekha Sachdeva
सुरेखा सचदेव

Production Officer / उत्पादन अधिकारी
Narender Kumar
नरेन्द्र कुमार

Illustrator / चित्रकार
Mistunee Chowdhury
मिष्तुनी चौधुरी

Printed and published by Mr. Satish Kumar, Joint Director (Production), National Book Trust, India, Nehru Bhawan 5, Institutional Area, Phase-II, Vasant Kunj, New Delhi-110070

Typesetted & Printed at Pushpak Press Pvt, Ltd. 203-204, DSIDC Shed, Ph-I, Okhla Ind. Area, N.D.

Contents/सूची

Review a Book, Design a...		1
सात समुंदर	डॉ. अमिताभ शंकर राय चौधरी	2
Irah Becomes Flower...	Toety Maklis	5
नवगुंजर	कल्याणी महापात्र	9
Reflections	Herminder Ohri	11
करमू चाचा का ताँगा	डॉ. सुनीता	13
Curious Colin	Avril C. Dsouza	17
कृतज्ञ हाथी	तपेश भौमिक	19
A Voice That...	Bibhuprasad Mohapatra	21
मुर्गा बाँग लगाए क्यों?	वीणा श्रीवास्तव	24
Decoding Happiness	Srihari Nayak	26
छोड़ दी शरारत	संदीप कपूर	28
छुट्टियाँ रंग-बिरंगी	संगीता सेठी	30
Courageous Jhuma	Sribas Mondal	32

***Editorial Address*/संपादकीय पता**

National Centre for Children's Literature, National Book Trust, India, Nehru Bhawan 5, Institutional Area, Phase - II, Vasant Kunj, New Delhi-110070

राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेस-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070

E-Mail (ई-मेल) : office.nbt@nic.in

Per Copy/ एक प्रति Rs. 10.00 Annual subscription/वार्षिक ग्राहकी : **Rs. 100.00**

Please send your subscription in favour of **National Book Trust, India.**

कृपया भुगतान **नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया के** नाम भेजें।

This Bulletin is meant for free distribution to Readers' Clubs associated with National Centre for Children's Literature.

यह बुलेटिन राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र से जुड़े पाठक मंचों को नि:शुल्क वितरित किया जाता है।

Review a Book, Design a Cover

National Centre for Children's Literature (NCCL) of National Book Trust, India in association with India Trade Promotion Organisation and Federation of Indian Publishers organized a workshop 'Let's Review a Book' and an interactive session-cum workshop with an illustrator for school children during Delhi Book Fair 2014 at Pragati Maidan, New Delhi on 29 August 2014.

The first session on book review was conducted by Prof. Nandini Sahu, Associate Professor of English, IGNOU and creative writer and the second session on illustration was conducted by Shri Subir Roy, renowned illustrator and Art Director at Children's Book Trust.

While giving details on how to write a book review, Prof. Sahu said that, "the role of reviewer is very important as the reviewer tells the reader what the book is all about." She further added that, "since the reviewer has the freedom to write about the book, his mind should be open and should not have negative approach towards the writer, especially towards the new writer." She also informed that the reviewer has freedom to give his opinion on the conclusion of the book and if he does not like the end of the book, he may suggest an alternative.

In the second session, Shri Subir Roy, well-known illustrator gave an insight into designing a cover of the book. He

said that in our country there is no dearth of good artists. He informed children about the young Indian artists who have won several awards at international level. He shared his experience as an illustrator and gave tips to children to draw good illustrations.

The children showed keen interest in both the sessions and interacted with the speakers. They asked several question related to reviewing a book and designing the cover. More than 150 children from various schools of Delhi and NCR including Ahlcon International School, Mayur Vihar, DAV Public School, Paschim Enclave, DAV Public School, Shreshtha Vihar, Rama Public School, Najafgarh, Sarvodaya Bal Vidyalaya, Anand Vihar, Shraddha Mandir School, Faridabad, among others participated in this programme.

The best twenty students in the workshop were given away NBT books as awards along with certificates. All the participants were given NBT books as gift. Shri Manas Ranjan Mahapatra, Editor, NCCL-NBT coordinated this programme.

धारावाहिक उपन्यास
भाग : 18

सात समुंदर

मोती की कद्र समुद्र से बाहर निकलने पर होती है

डॉ. अमिताभ शंकर राय चौधरी

गायत्री स्विमिंग नहीं सीखने का पूरा मन बना चुकी है। आधी रात को गायत्री ने वह किया जिसकी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था। वह घर से निकल गई और पिल्लई के बगीचे में जाकर सो गई। सुबह होने पर घर में हंगामा मच गया। अंततः नारायणन उसे ढूँढ़ निकालते हैं। गुस्से में वे गायत्री को एक तमाचा जड़ देते हैं। गायत्री स्तब्ध रह जाती है। आगे नया घटनाक्रम...

''हर गेंद मेरे लिए पहली गेंद है, चाहे मेरा स्कोर शून्य हो या दो सौ।...यह निरंतर संघर्ष है।''
-सर डोनाल्ड ब्रैडमैन

गायत्री को देखते ही उसकी दादी ने दोनों हाथ पसारकर उसे छाती से लगा लिया, ''अरे मेरी रानी, तू कहाँ चली गई थी?''

अनंती भी दौड़कर आई। वह सब समझ रही थी, परंतु कोई निर्णय नहीं ले पा रही थी।

मणिशंकरन भी उसे ढूँढ़ने कहीं गया हुआ था। घर वापस आने पर जब उसने सब कुछ सुना तो लगा झल्लाने, ''मैं पहले से ही कह रहा था, इतना बोझ बच्ची कहाँ तक बर्दाश्त करेगी? अच्चा तो कुछ सुनते ही नहीं।''

"बस-बस, बहुत हो गया!" नारायणन भी बरस पड़े। "कल से तैरना बंद, तुमलोगों के जो जी में आए करो।"

पैर पटकते हुए वे चल दिए पूजाघर की ओर।

फिर भी समय का पंछी कभी थकता नहीं, उड़ता जाता है। गायत्री अपने समय से स्कूल जाने के लिए तैयार हो गई। खाने की इच्छा तो बिलकुल न थी, फिर भी बात कहीं बढ़ न जाए, इसलिए उसने खाना खाया और बैग उठाकर चल दी।

टिफिन के समय मीनाक्षी कह रही थी, ''अरे गायत्री, मेरी दीदी की शादी तय हो गई है।''

गायत्री कुछ बोली नहीं।

"आज पंडित जी आए थे। अगले महीने इक्कीस को शादी होगी, तुम रहोगी न?"

''मुझे कहीं जाना नहीं है, मैं यहीं रहूँगी।''

''मतलब! तू तैराकी कम्पिटीशन में भाग लेने तिरुवनंतपुरम नहीं जाएगी?''

"मुझे तैराक-वैराक नहीं बनना!" गायत्री कुछ उदास थी।

''क्यों रे?'' मीनाक्षी को आश्चर्य हुआ। गायत्री चुप थी तो उसने आगे कहा, ''मालूम है, मेरे जीजा जी डॉक्टर हैं, कोजीकोड़ में नौकरी करते हैं, वहीं जहाँ टाइल्स का कारखाना है...।''

वह बक-बक करती रही।

गायत्री चुपचाप सुन रही थी।

शाम तक कुमारन स्वयं उनके घर आ धमका, ''सर, क्या बात है? आज गायत्री आई नहीं? उसकी तबीयत तो ठीक है न?''

तब तक गायत्री भी स्कूल से आ चुकी थी। नारायणन ने खीजकर कहा, ''तबीयत तो ठीक है, पर दिमाग खराब हो गया है।''

''मतलब?'' कुमारन भी चौंक पड़ा।

''अब इन्हीं से पूछो। इसका बाप कह रहा है इसे स्विमिंग नहीं सीखनी है। तैराक नहीं बनना है। यह खुद भी भाग रही है। इतना बोझ यह झेल नहीं पाएगी। इससे इतनी मेहनत नहीं हो सकती।''

गायत्री सिर झुकाए दूर खड़ी थी। अनंती ने आकर कुमारन के टेबल पर कॉफी रख दी। फिर चुपचाप चली गई।

कुमारन ने एक बार इधर देखा, फिर गायत्री के सिर पर हाथ फेरते हुआ कहा, ''गायत्री, मैं भी हरिपदम गाँव का ही लड़का हूँ। तुझे देखकर मेरे मन में आशा का ज्वार आ गया था कि तू कुछ बनकर दिखाएगी। तुझे तकलीफ तो होती ही होगी, और उस तकलीफ को मैं किसी तरह कम भी तो नहीं कर सकता। खैर, निर्णय तो तुम्हें ही करना होगा।''

फिर दीर्घ श्वास छोड़कर वह नारायणन के पास गया, ''सर, मैं चलता हूँ। लेकिन जाते-जाते एक बात अवश्य कहूँगा, मोती अगर समुद्र के नीचे सीप के अंदर पड़ा रहे तो उसकी कोई कद्र नहीं होती। उसकी कद्र तो तब होती है जब उसे दुनियावालों की आँखों के सामने लाया जाए।''

थोड़ी देर के लिए वह चुप हो गया। नारायणन भी शांत होकर बैठे थे। वे कर क्या सकते थे? गायत्री अपराधी की भाँति दूर खड़ी थी। उसकी ओर देखते हुए कुछ उदास

स्वर में फिर उसने कहा, ''इतना छोटा देश कीनिया, जहाँ लोगों को रोटी तक नसीब नहीं होती। आज उसके एथलीट विलियम इयामपॉय गुडविल गेम के आठ सौ मीटर में सोना जीतकर घर वापस जाता है। क्रिकेट की तो बात ही छोड़िए, कहाँ से कहाँ पहुँच गया है।'' फिर नारायणन की ओर देखते हुए उसने कहा, ''एक बात और है सर, गायत्री यदि मणि की बेटी है तो आपकी भी कोई है। आप ही बरगद के वह पेड़ हैं, मणिशंकरन जिसकी डाल है और गायत्री टहनी। आपका भी उस पर कुछ तो अधिकार है ही।''

उसकी बातों से वातावरण मानो बोझिल-सा हो गया। वह उठ खड़ा हुआ, "सर, मुझे क्षमा कीजिएगा। आवेश में कुछ ज्यादा ही कह गया। असल में गायत्री को लेकर मेरे मन में एक सपना पलने लगा था। अच्छा, अब मैं चलूँ।"

उसने प्रणाम किया और सामने रखी कॉफी की तरफ देखे बिना दरवाजे से ओझल हो गया।

और पता नहीं क्यों, गायत्री दौड़कर अंदर चली गई। कहाँ तो उसे खुश होना चाहिए था कि चलो छुट्टी मिली, बला टली, पर वह तो अपने होंठ पर दाँत गड़ाए खड़ी रही, चुपचाप। होंठ पर खून जम गया, पर उसे जैसे खबर ही नहीं।

नारायणन बैठे रहे, निश्चल।

सी-26/35, 440-ए
रामकटोरा, वाराणसी-221001 (उ.प्र.)

Irah Becomes Flower Gardener

Toety Maklis

The meeting room was noisy. Gamelan music intermingled with loud and soft voices. Several men wearing ties were talking to the village headman of Cibiru. These were city men who wanted to invest their money in flowers marketable in Jakarta.

This was the first meeting between the investors and the farmers. The farmers assembled from several villages had, of course, to be given some guidance first, as they had no experience in growing flowers.

The meeting place was now full of people. First, the farmers had to listen to the speech made by the headman of Cibiru, and after that to some explanations offered by the city men. Finally, those who were interested in becoming flower growers were requested to hand in their names and addresses to Mrs. Sri.

There were obviously not many farmers who wanted to become flower gardeners. From the neighbouring village Cihejo, the one most expected to become a flower plantation because of its suitable soil and climate, there was only one representative, a cheerful girl of fourteen called Irah.

Irah was the only daughter in her family. She was the eldest, then came three little boys. She had loved flowers since she was very small. As the daughter of a farmer, she knew a lot about growing plants.

Mrs. Sri put Irah's name on the list, and gave her a book with pictures of all kinds of attractive flowers. Mrs. Sri told Irah to read and study the book so that she would know the names of the flowers, what flowers were suitable for growing in Cihejo, how to plant them,

and what fertilizers to use. Irah nodded and promised to read the book.

The next meeting would be held in three months. By then, all participants were expected to know the contents of the book so that they could put their knowledge into practice.

Irah did not look cheerful on her way home. How could she understand what was written in the book if she didn't even know how to read it? There was no one to ask at home. Neighbours? No, better not ask the neighbours, she thought.

Oh, how stupid she was for having thrown away her chance to study! How she regretted it now. There was indeed a compulsory elementary education in her village. A few weeks after she started school, however, she got typhoid fever, and had to stay at home for months. When she returned to school, she was already far behind the other children. She grew lazy, and used typhus as an excuse for staying home, making people believe that high fever had made her unable to learn. She was allowed to stay for two years in the same class, but spent most of the time drawing pictures. She became quite skilled at making pictures and designs. Finally the village headman agreed to release her from compulsory elementary education. Oh, she truly regretted it now! That night she couldn't sleep.

The next morning, Irah was sleepy and irritable. The whole family was worried. "Was it because she had had to go all by herself?" Her father asked himself. "But she knew that I had to attend an important meeting to discuss the annual kite competition." Irah's father and brothers were very excited about the kite competition which was to take place in three months in their village. There were to be several prizes, one of them for the best design.

The Cihejo villagers all tried to make their kite the best possible. They had won several prizes in the past and, as before, they expected Irah to do the illustration.

"We have to start discussing the design of our kite as soon as we can," they said, "it takes much time to come to an agreement. We only have three months."

"I also have three months to read the book," thought Irah, feeling her dreams shattered. She sat hours under a jambu tree, staring at the blue sky and the top of the mountains. Her thoughts were far away, in a rose plantation. If she succeeded in this business, she would be able to see and smell roses every day. She would not have to look for flowers every time she had to visit poor Aunt Cicih, who was stuck to her wheelchair and loved flowers very much. She would not have to worry about the marketing. Those city men would take care of it. Just thinking about being among roses and other flowers every day made her

feel happy. She smiled, then suddenly became sad again. "Oh, how can I grow roses if I do not know how to take care of them? If only I could read that book," she sighed.

She was startled to hear her name called. It was time to go in for lunch.

During lunch, Irah's brothers talked incessantly. Irah remained silent.

In the afternoon Irah's friends came. They wanted to talk to her again about the kite. When they pressed her for a reply, she became angry. "I don't want to help you," she shouted, "go away!" She ran crying to her room. Her friends stared in surprise.

Irah's mother did not understand. "Something had happened at the meeting," she thought. "Did they refuse her because she was a girl? No, she is the only representative of Cihejo; they have to accept her." She followed her daughter into her room and saw her flying herself down on the bed crying. She sighed and looked around the room. She saw something on the table. She went to look at it — a book about flowers. She turned the pages, and suddenly she knew…

Back in the sitting room, she faced Irah's friends. "Irah is in trouble," she told them, "she needs your help to make her dreams come true. Will you help her? Will you teach her to read?"

They were all ready to help, and finally it was decided that Irah's best friend Sari would secretly teach her to

read and write. The others had to act as if they knew nothing about it.

"Well, you all have to be patient," said Irah's mother. "Until she has overcome her obstacle, Irah obviously will not be able to help you with the kite."

The next morning Sari came to have a chat with Irah.

"This is unbearable. Because I can't read, I won't be able to possess that flower plantation I've always dreamed of," Iran cried.

"Don't be sad, Irah. You will posses your rose garden, for I'm going to help you. I'm going to teach you every day until you are able to read and write."

"You mean it?" Cried Irah, "Oh, but we only have three months' time, and I am expected to help them make that kite."

"Let's forget the kite for the time being. Knowing your talent, you don't need much time to make the design and

illustration. Why not concentrate on your lessons first? If you do your best, you will be able to read within one month."

"I'll do my utmost," Irah promised.

Irah made good progress. She was now more cheerful. She did not mind that all her friends knew about her learning to read, and she did not mind being taught by them. They taught her in turns, to read, to write and to take dictation. In the end, the book about flowers was read and discussed in the 'classroom' by all.

Irah was grateful to her friends, and one day she told them that it was time to help them with the kite. They all clapped their hands when they heard the good news.

They spent many days discussing the shape and design of the kite. Finally one of the boys made the kite and Irah made the illustration. When she had finished, everybody was filled with admiration. It was a big kite with a long tail, a unique shape with a beautiful design of flowers on it. The village headman came to see it for himself and praised her. Irah had done her utmost for the good name of her village, Cihejo.

As expected, Cihejo won First Prize, for the kite's beautiful design of flowers was irresistable. The whole village was invited by the headman to celebrate.

"Now that the competition is over, I'm going to concentrate on my roses," Irah told her father the next day. "I'm going to be a rose gardener."

"I fully agree with you, and I promise to help you," said her father. "The most important thing is that you feel happy with your work. Do you realize how much you can do with flowers?"

"Aunt Cicih will certainly feel happy every time I send her flowers," Irah said.

"Not only Aunt Cicih, Irah. You can make many people happy with your flowers. In turn, making others happy will bring happiness into your own heart."

A few months passed.

It was a sunny day. Irah's garden had never looked so pretty. Flowers in all the colours of the rainbow made her house look bright. The smell of roses filled the air. The garden was full of roses, marigolds, marguerites and carnations, and in the house, vases full of roses filled every corner of the rooms.

All kinds of flowers in Irah's flower plantation found a market in Jakarta. Irah increased her knowledge by reading many books.

Her dream came true. She could see and smell roses every day, and sent flowers to her aunt and also to her friends on their birthdays and on other occasions as well. She had become an accomplished flower gardener.

(A Folktale from Indonesia from NBT Publication *The Last Ticket and Other Stories*)

नवगुंजर

कल्याणी महापात्र

सतयुग में श्वेत नामक एक राजा ने एक यज्ञ किया था। उस यज्ञ में अग्निदेव को पर्याप्त घी अर्पण किया गया था। ज्यादा घी खाकर अग्निदेव को 'लुदु-बुदु' या 'मंदाग्नि' व्याधि हो गई। तीन युग बीत जाने पर भी वे स्वस्थ नहीं हो पा रहे थे। उस रोग की औषधि सिर्फ खांडव वन से ही उपलब्ध हो सकती थी। वह वन देवराज इंद्र के अधीन था। वहाँ से औषधि लेने की अनुमति देने का अर्थ समूचा वन-दहन कराने की अनुमति देना था। वन में ढेर सारे पेड़-पौधे थे, जिन पर अनगिनत चिड़ियों का बसेरा था। ढेर सारे कीड़े-मकोड़े भी वहाँ अपना डेरा डाले हुए रहते थे। जंगल नष्ट हो जाने पर अनेक पशु-पक्षी, पेड़-पौधे नष्ट हो जाते तो कई और अपना बसेरा खो देते। वृक्षों के दहन के बाद परिवेश विपन्न हो जाता। इंद्रदेव को वर्षा कराने में परेशानी होती। इसलिए इंद्रदेव ने खांडव वन-दहन की अनुमति नहीं दी।

मध्यम पांडव अर्जुन तब एकाकी वनवास में थे। दान माँगने के बहाने अग्निदेव ब्राह्मण के भेष में उनसे खांडव वन-दहन माँग बैठे। दान के लिए संकल्पबद्ध अर्जुन ने खांडव वन में अग्निसंयोग किया। इस वजह से समस्त वन प्रदेश के पेड़-पौधे, जीव-जंतु, चिड़ियों, सरीसृप आदि में हाहाकार मच गया। पृथ्वी लोक का घोर नुकसान हो गया। इस तरह ज्यादा दिन आग लगे रहने से पृथ्वी का संतुलन बिगड़ जाता।

इधर, अग्निदेव की व्याधि का शमन होने लगा। पृथ्वी को बचाने के उद्देश्य से श्रीकृष्ण अर्जुन को ढूँढ़ने लगे। युधिष्ठिर को अर्जुन का ठिकाना मालूम न था। सहदेव ने विचार करने के बाद कहा, अर्जुन अब मणिभद्रा पर्वत पर निवास कर रहे हैं। पक्षीराज गरूड़ ने पलक झपकते ही अपने प्रभुजी को वहाँ पहुँचा दिया। अर्जुन तब अपने धनु-तुणीर सँभालने में व्यस्त थे। गरूड़ को पीछे रखकर मायाधर श्रीकृष्ण एक नए रूप में अर्जुन के सामने गए।

एक ही शरीर में नौ पशु-पक्षियों का रूप धारण कर अर्जुन के सामने वे किलकारी मारकर खेलने लगे। कुक्कुट के सिर पर का लाल चूड़ा मुकुट-सा शोभायमान था। पीठ पर वृषभ के चूल के साथ मोर-कंठ की शोभा अतीव रमणीय लग रही थी। सिंह-कटी, सर्प-पुच्छ, एक पाँव व्याघ्र

का, दूसरा हिरन का, तीसरा हाथी का, सामने वाला पाँव मनुष्य का, हाथ में एक कमल का फूल पकड़े हुए वे अर्जुन के सामने जा पहुँचे।

पत्तों से छनकर आती हुई धूप में उनका विचित्र शरीर चमक उठता था। अर्जुन वैसे विचित्र जीव को देखकर थोड़ी देर के लिए सोच में पड़ गए। सोचने लगे, यह तो एक अनोखा जीव है। जीवन में मुझे बहुत पहाड़, जंगल घूमना पड़ा है, लेकिन ऐसा अनोखा प्राणी तो मैंने कभी नहीं देखा। तो फिर ऐसा प्राणी आया कहाँ से? अचानक उनके मन में एक बिजली-सी कौंध गई। कहीं यह काम मायाधर सखा श्रीकृष्ण का तो नहीं! नहीं तो ऐसा प्राणी तो पृथ्वी पर संभव नहीं। बस, फिर क्या था! बिना किसी सोच-विचार के वे घुटने टेककर, दोनों हाथ जोड़कर, बैठकर लगे प्रार्थना करने। श्रीकृष्ण ने अनुभव किया कि सखा अर्जुन उन्हें पहचान गए हैं। ऐसे में वे छद्म वेश छोड़ अपने असली रूप में आ गए। दोनों सखा आलिंगनबद्ध हो गए। दोनों की खुशी उछल-उछलकर बाहर निकलने लगी। बहुत दिनों से दोनों मिले जो नहीं थे! सखा के अनुरोध पर अर्जुन ने खांडव दहन का विचार त्याग दिया। इस प्रकार, खांडव वन जल जाने से, नष्ट होने से बच गया। साथ ही, सारी पृथ्वी का परिवेश भी नष्ट होने से बच गया।

नौ जीवों के समाहार हेतु श्रीकृष्ण के इस रूप को 'नवगुंजर' के नाम से आज भी ओड़िशा में मान्यता मिली हुई है।

* * *

* *

जोब्रा, कटक-753003

(ओड़िशा)

Reflections

Herminder Ohri

Long, long ago in a forest lived a holy man, a Rishi. He had disciples from far and near. They lived in his *ashram* and he was their Guru or teacher. From him they learned the holy scriptures and philosophy. They also worked on the land, so they were self sufficient. It was a hard but satisfying life. Among his disciples was simple, quite, village boy whose name was Kundan. He seldom spoke, but listened intently, and observed all that went on.

One day the Rishi saw Kundan in deep thought. He said nothing. The follwing days, Kundan was still the same. In fact, in the middle of his chores he would stop, and forget to complete them. The Rishi called Kundan and asked him what was the matter?. Did he want to go home? What was troubling him that he was forgetting his work? Was he unhappy? Kundan sat at his Guru's feet with folded hands.

"Oh, no! I am very happy here, but there is something I am not able to understand."

"What is that my son?" inquired the Rishi.

"Living here in the *ashram,* I have understood the rhythm of the seasons, the plants when they flower; and how they trun into fruits; autumn, when they turn old and fall from the trees or bushes, spring when they are reborn. I have understood the ways of the wild animals of the forest, and when to milk the cows and goats. But , it is the human mind and behaviour that I am not able to understand at all.

The Rishi smiled saying, "Tomorrow, much before sunrise, you and I will leave the forest and there we will get some answers."

Next day they left, and walked to the edge of the forest, to a dusty road that led to a village. The Rishi said, "Kundan

hide behind a tree from where you can see me, do not make a noise and come out only when I tell you to."

The Rishi lay face down on the dusty road, and Kundan hid behind a tree. For sometime nothing happened, then cries of "Thief! Thief! Stop him" rent the air. A man was running with a bulging sack, chased by a crowd of angry villagers. As the thief saw the prostrate figure lying on the road "Ah! A novice thief, he has already fallen and lost what he robbed." With a chuckle he escaped into the forest.

A little while later, indignant screams of women could be heard, from the other side of the road. Some men came running out of the trees. They were spying on the village women bathing in the pond, seeing the figure lying on the road, they hooted with laughter, "Silly man! This is not from where he can see the women bathing, he should have come with us." Joking and smirking they made their way towards the village.

As the evening drew near, a holyman came that way, he stopped in amazement, "What piety! Look at him, he is so immersed in the almighty, that he is totally unaware that he is lying on a dusty road, even the heat and cold don't bother him." He took of his shawl and covered the Rishi, bowed his head and humbly folded his hands in prayer and went his way.

Now the Rishi stood up and called out to his disciple, "Did you see all that happened? Each person saw in me his own reflection. The world is a mirror, it only reflects what you show it." Kundan was now wiser. He walked back with his guru, to their forest *ashram*.

B-4/2, Safdarjung Enclave
New Delhi-110029

करमू चाचा का ताँगा

डॉ. सुनीता

बचपन की बातें याद करती है नीना तो मन दौड़-दौड़कर नानी के गाँव जा पहुँचता है और फिर सालवन गाँव की यादों में ऐसे रम जाता है कि समय का कुछ पता ही नहीं चलता।

नीना जब छोटी थी, कोई दस-ग्यारह बरस की, तब तो हालत यह थी कि कोई छुट्टी होते ही उसकी चीख-पुकार शुरू हो जाती थी, ''चलो माँ, चलो, नानी के गाँव में। बताओ, कब चलोगी नानी के गाँव में?''

सुनकर नीना की माँ खुश भी होतीं, पर कभी-कभी परेशान होकर डाँट भी दिया करती थीं, ''क्या दिनभर गाँव-गाँव लगाए रखती है! शहर अच्छा नहीं लगता, तो जा, गाँव में ही जाकर रह ले!''

नीना रुआँसी हो जाती तो माँ झट मनाना शुरू कर देती, ''अच्छा, मेरी बिट्टो, चलेंगे, जल्दी ही जाएँगे। बस, गरमी की छुट्टियाँ आने दे।''

और नीना ने माँ से पक्का वायदा करा लिया था कि इस बार वह पूरी-की-पूरी गरमी की छुट्टियाँ नानी के गाँव में ही बिताएगी।

गरमी की छुट्टियाँ होते ही नीना ने माँ को फिर याद दिलाया, ''चलो माँ, चलो नानी के गाँव में!''

माँ ने झटपट तैयारी की। नीना और रोहित को साथ लिया और गाँव की यात्रा शुरू हो गई। पहले बस में और फिर देर तक करमू चाचा के ताँगे में।

करमू चाचा का ताँगा गाँव के ऊबड़-खाबड़ रास्तों पर टिक-टिक-टिक करके आगे बढ़ता तो नन्हे रोहित को डर लगता, पर नीना खिलखिला पड़ती। कहती, ''करमू चाचा का ताँगा, ताँगा नहीं किसी राजा का रथ है। मुझे तो इस पर सवारी करके बड़ा मजा आता है।'' इस पर नीना की माँ हँस पड़तीं और करमू चाचा अपने ताँगे को और भी तेज भगाना शुरू कर देते।

गाँव में पहुँचकर नीना को इतने पुराने दोस्त और सहेलियाँ मिल गईं कि वह तो सारा दिन उन्हीं के साथ खेल-कूद में मस्त हो गई। और फिर रात को नानी से किस्से-कहानियाँ सुनने का प्रोग्राम। कई रोज यों ही गुजर गए। नीना की माँ ने दो-एक बार कहा भी, ''नीना, बहुत दिन हो गए। शहर में तेरे पिता जी परेशान हो रहे होंगे। अब वापस चलना चाहिए।''

पर नीना भला इतनी जल्दी गाँव को छोड़कर कैसे लौट जाती? वहाँ उसे इतनी नई-नई बातें जानने-सुनने को मिल रही थीं। इतने नए-नए खेल थे। पेड़ों की ठंडी छाँव में घर बनाने और दौड़ने-भागने का आनंद ही कुछ और था। अब तो रोहित को भी यह अच्छा लगने लगा था। नीना ने कहा, ''माँ... माँ, आप लौट जाइए। मैं और रोहित छुट्टियाँ खत्म होने पर आएँगे।''

माँ के चले जाने पर नीना की शरारतें और भी बढ़ गईं। उसका प्यारा खेल था पेड़ पर चढ़कर वहाँ से नीचे छलाँग लगाना। एक बार छलाँग लगाते समय उसका पैर पेड़ की डाल में ऐसे अटका कि नीचे गिरी तो सिर खूनमखून हो गया। उधर से करमू चाचा अपना ताँगा लेकर आ रहे थे। नीना की हालत देखी तो झट उसकी नानी के घर पहुँचाया। फिर करमू चाचा ही अपने ताँगे में वैद्य लक्खीराम जी को बिठाकर ले आए। उनहोंने पट्टी बाँधी, पर नीना का दर्द के मारे बुरा हाल था। नानी मुश्किल से उसे सँभाल पा रही थी।

तब करमू चाचा नीना के पास बैठकर गप्पें हाँकते रहे और 'ऊँ-ऊँ' कर रोती नीना न जाने कब खिलखिलाकर हँस पड़ी।

तीसरे दिन अपना ताँगा लेकर फिर आए करमू चाचा। बोले, ''चल नीना, तुझे घुमाकर लाऊँ। तेरा मन भी बदल जाएगा।''

नीना और रोहित के साथ-साथ गाँव के और बहुत-से बच्चे भी बैठे और करमू चाचा का ताँगा गाँव से कुछ बाहर जंगल की ओर दौड़ पड़ा। वहाँ नीना ने पहली बार नाचते हुए मोर देखे और दूर, बहुत दूर एक हिरन भी दिखाई दिया। खूब सारे बंदर भी पेड़ों पर उछल-कूद कर रहे थे। ताँगे में बैठे बच्चे पहले तो डरे, फिर तालियाँ बजाकर खिलखिलाकर हँसे। नीना ने पूछा, ''करमू चाचा, आपको जंगल में ताँगा चलाते डर नहीं लगता?''

करमू चाचा हँसकर बोले, ''वाह, डर कैसा! मैं ताँगा दौड़ाऊँ तो शेर भी मेरा पीछा नहीं कर सकता। उसे मुँह की खानी पड़ेगी!'' सुनकर

नीना समेत ताँगे में बैठे बच्चे जोर से चिल्लाए, ''करमू चाचा, जिंदाबाद!''

फिर एक-एक कर छुट्टियाँ खत्म होती गईं। नीना के स्कूल खुलने का दिन पास आ गया। नीना के पिता जी की चिट्ठी आई, 'प्यारी बेटी, तुमने नानी को बहुत तंग किया होगा। अब करमू चाचा से कहना, इस शनिवार को वह तुम्हें बस में बिठा देगा। यहाँ मैं तुम्हें बस अड्डे पर लेने आ जाऊँगा।'

वह दिन भी आ गया, जब नीना और रोहित को गाँव छोड़कर करमू चाचा के ताँगे में बैठकर शहर की यात्रा करनी थी। उस दिन आसमान में बादल छाए हुए थे और बूँदाबाँदी भी हो रही थी। नानी बोलीं, ''नीना, आज रहने दे। कल चले जाना। स्कूल तो सोमवार को ही खुलेगा न!''

नीना बोली, ''नानी, पिता जी बेकार में बस अड्डे पर घंटों खड़े रहेंगे, परेशान होंगे। आज ही चले जाएँ जो अच्छा है।''

करमू चाचा का ताँगा नीचे आकर खड़ा था। नानी के साथ-साथ गाँवभर के बच्चे नीना और रोहित को ताँगे तक छोड़ने आए। नानी बार-बार समझा रही थीं, ''बस में आराम से बैठना। शरारत मत करना।'' नीना और रोहित ताँगे में बैठे और करमू चाचा ने झट से ताँगा दौड़ा दिया।

पर थोड़ी दूर जाते ही बारिश तेज हो गई। बिजली कड़कने लगी। रोहित डर गया। पर नीना ने समझाया, ''डर मत रोहित, अभी करमू चाचा हमें बस में बैठा देंगे। फिर हम जल्दी ही शहर पहुँच जाएँगे।''

लेकिन अब पानी इतना तेज हो गया था कि रास्ते का कुछ पता ही नहीं चल पा रहा था। कच्ची सड़क थी, पर उस पर तेजी से बहता, ठाठें मारता पानी। बीच-बीच में घोड़ा आगे बढ़ने से इनकार कर देता, दोनों टाँगें ऊपर करके खड़ा हो जाता। करमू चाचा प्यार से उसे मीठी फटकार देते, तो वह आगे चलता। अंदर-ही-अंदर डर तो नीना को भी लग रहा था, पर वह अपना डर भूलकर रोहित को चिपकाए हुए थी। प्यार से समझा रही थी, ''डर मत रोहित,

डर मत! करमू चाचा तो कितने होशियार हैं। देखना, अभी ताँगा पक्की सड़क पर आया जाता है।''

और ताँगा पक्की सड़क पर पहुँचता, इससे पहले ही एक गड्ढे में पहिया फँसा तो करमू चाचा का ताँगा उलट गया। नीना और रोहित दोनों पानी में डुबक-डुबक करने लगे। करमू चाचा दौड़कर आए। दोनों को पानी से निकाला, छाती से चिपकाया। फिर बोले, ''अरे, तुम्हारे तो सब कपड़े गीले हो गए! मेरा घर पास में है। चलो, चलकर कपड़े बदल लो।''

करमू चाचा ने प्यार से घोड़े की गरदन पर हाथ फेरा तो अपनी अक्खड़ता भूलकर, फिर वह सँभल-सँभलकर चलने लगा। ताँगा गड्ढे से बाहर आ गया था। अब वह करमू चाचा के घर की ओर दौड़ रहा था, जो सड़क के पास ही था। नीना और रोहित करमू चाचा के घर पहुँचे तो सरदी के मारे उनके दाँत बज रहे थे। शरीर में कँपकँपी छूट रही थी। करमू चाचा की पत्नी जसोदा ने नीना और रोहित को अपने बच्चों के कपड़े लाकर बदलने को दिए। सूखे कपड़े पहनकर दोनों ने गरम-गरम चाय पी, पराँठे खाए, तब कुछ चैन पड़ा।

अगले दिन फिर करमू चाचा का ताँगा दौड़ रहा था। करमू चाचा ने नीना और रोहित के साथ अपने बेटे शिवराम को भी बिठा लिया था। बस अड्डे पर आकर करमू चाचा खुद नीना और रोहित के साथ बस में बैठे। शिवराम ताँगा लेकर वापस चला गया।

उस दिन करमू चाचा के साथ नीना और रोहित घर पहुँचे तो नीना के माँ-पिता जी की खुशी का ठिकाना न था। उन्होंने करमू चाचा को बड़े प्यार से दुआएँ दीं। करमू चाचा उस दिन शहर में ही रहे। अगले दिन गाँव लौट गए।

उसके बाद तो नीना जब-जब गाँव गई, करमू चाचा के ताँगे की सवारी करना नहीं भूली। करमू चाचा के ताँगे में बैठकर दूर-दूर की सैर करने का मजा ही अलग था।

अब नीना बड़ी हो गई है, लेकिन करमू चाचा की मीठी बातें अब भी नहीं भूली। हाँ, पिछले साल वह गाँव गई थी तो करमू चाचा उसे लेने के लिए नहीं आए। ताँगा तो करमू चाचा का ही था, पर उसे उनका बेटा शिवराम चला रहा था। नीना ने नानी के गाँव के बारे में ढेरों बातें कीं। फिर करमू चाचा की बात भी चली। नानी बोलीं, ''करमू गुजरा तो तुझे बहुत याद कर रहा था नीना। उसने मुझे यह सफेद मोतियों की माला दी थी कि नीना की जब शादी हो तो उसे करमू चाचा की ओर से यह उपहार देना।''

सुनकर नीना की आँखें गीली हो गईं। उसने सफेद मोतियों की उस माला को सँभालकर रख लिया। जब-जब वह उसे पहनती है, करमू चाचा का हँसता-मुसकराता चेहरा आँखों के सामने आ जाता है।

545, सेक्टर-29
फरीदाबाद-121008
(हरियाणा)

Curious Colin

Avril C. Dsouza

Colin was a white, woolly, friendly sheep.

"Where's Colin?" the good shepherd asked. No one seemed to know.

Colin was lost.

Colin had a curious nose. He sniffed here and he sniffed there, while he grazed. Colin had curious eyes. He searched here, there and everywhere for juicy grass and flowers. Colin was an explorer, he was the first of the sheep to find honey sweet blossoms.

Colin and Charlie were best friends.

Colin had taught Charlie how to sniff and tell good plants from bad plants. Grazing time was the best time. But gathering around their good shepherd and listening to his voice was even better. He spoke the language of their hearts.

One day the good shepherd had taken them to a grazing ground, all of them. He asked, "Do you know my voice little ones?"

"Yes, Master!" they replied. For, they loved him dearly.

"Then listen to my voice and stay close to me," he told them. The good shepherd was so caring that if any one of them was tired or ill, he would lift him on to his shoulders and carry him all the way home.

Another day, the good shepherd said, "I must warn you little ones, there are good shepherds and false shepherds. The false ones try to steal you from me."

Colin had shuddered. "I'll stay as close to you as I can, Master," he said.

Colin's friend Charlie looked around. He could not see Colin anywhere. Then he remembered; as they were all grazing Colin and Charlie had heard a voice. "Come this way, little ones, come this way," the voice said.

"The Master is calling us Charlie," Colin said.

"I don't hear the Master's voice, Colin," Charlie told him. "You have curious ears. It could be a false shepherd."

"Where's Colin?" the Master asked again. His voice trembled. Charlie went cold.

"Master," Charlie said. "We had heard a voice calling. Colin had lagged behind, then knowing it was not your

voice he came running and grazed beside me."

"I hope the false shepherd has not stolen Colin, Master," Charlie said with a sob.

"No false shepherd can steal Colin from me. I will bring him back. Colin knows the language of my heart," he said gently. "A good shepherd leads his sheep while a false shepherd feeds on his sheep."

Then the good shepherd cupped his mouth and called, "COLINnnnnnnn!" his voice shot forward like a dart; there was no answer. The good shepherd then put all the sheep in their pen. "Charlie, look after my sheep," he said. All the sheep huddled together. They were sad and afraid. The good stepherd ran this way and that. "Colin, do you hear me?" he kept calling.

After two long hours he heard a sob. He raced towards that sound. When Colin heard the good shepherd's voice he was filled with hope. He knew he must fight his way to that voice. Colin realized that he had made a mistake. Stumbling and staggering, he pushed the false shepherd aside.

"You are not my shepherd let me go", Colin cried. The false shepherd saw the good shepherd and fled.

Colin ran to the good shepherd. His Master held Colin close. "What happened, Colin?" he asked very tenderly.

"Oh, Master! I'm so glad you found me. I saw someone. I got curious and followed him. He had bundles of green leaves and he said he would take me to other juicy leaves. Soon I could no longer see you, Charlie and others. I said to him, "Will you please take me home?"

"He was a false shepherd. I got to know too late, because his voice was different. Then I caked to you".

"No one who calls out to me will be lost Colin," the good shepherd said and lifted Colin on to his shoulders, even though he himself was tired. As they neared home, the sheep in the pen began to bleat. Charlie was overjoyed.

"Colin is back home and all is well," said the good shepherd.

St. Xavier's High School
Camp Belgaum
(Karnataka)

कृतज्ञ हाथी

तपेश भौमिक

शाम ढलने लगी थी। तभी एक हाथी लँगड़ाता हुआ जंगल के पास की एक वन-बस्ती में आ घुसा तो लोगों में भगदड़ मच गई। लोग अपनी-अपनी जान बचाने की खातिर भाग खड़े हुए। बारह-तेरह वर्ष का एक बालक सोमन अपनी कुटिया की मचिया पर बुखार के मारे कराह रहा था। उसने भी शोर सुना, लेकिन घबराया नहीं। उसने टॉर्च की रोशनी में देखा कि कोई हाथी लँगड़ाता हुआ उसकी ओर चला आ रहा है। उसकी आँखों से आँसू झर रहे थे।

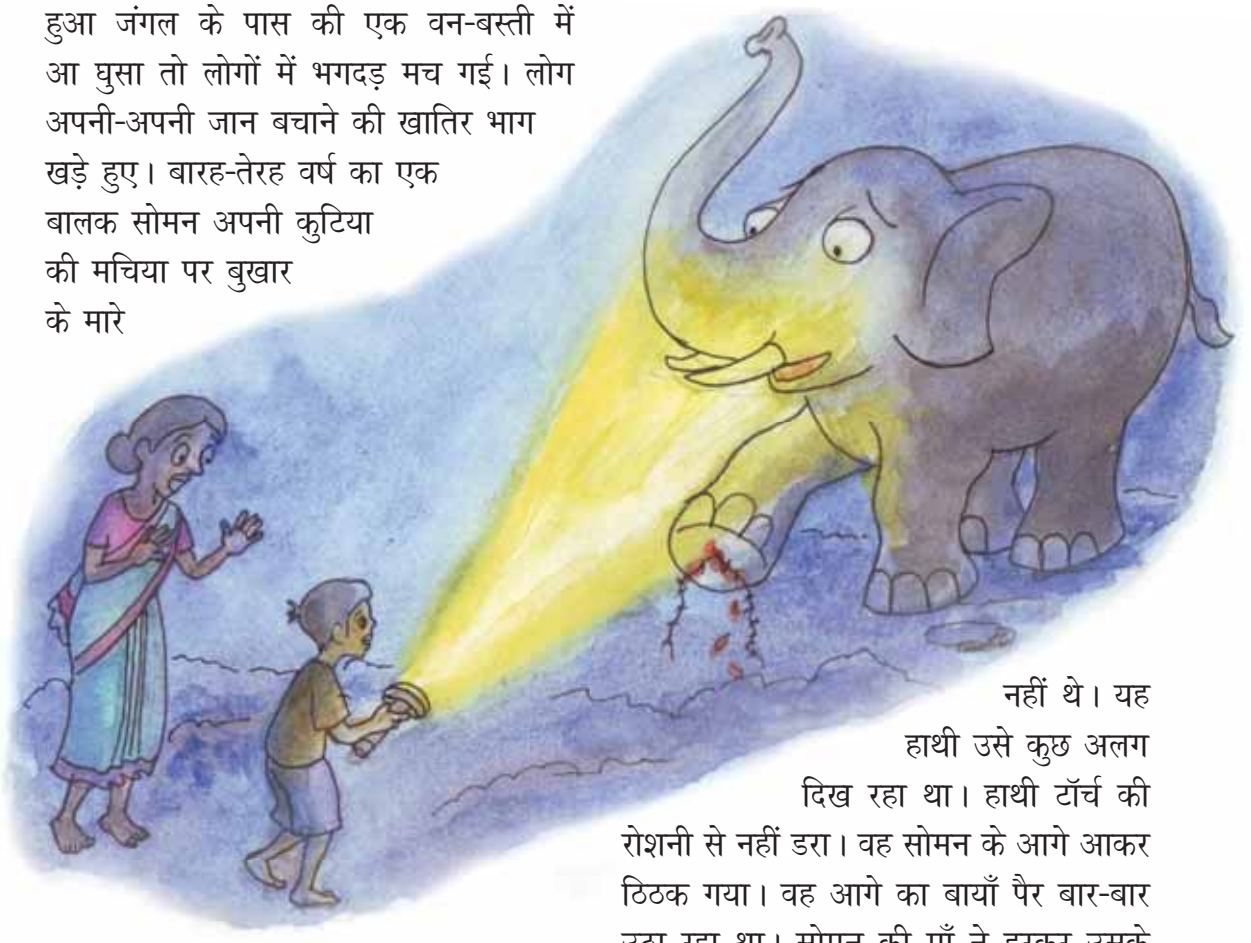

सोमन पहले भी कई बार जंगली हाथियों को देख चुका था। एक बार एक पागल हाथी को भी देख चुका था, लेकिन इसके लक्षण वैसे नहीं थे। यह हाथी उसे कुछ अलग दिख रहा था। हाथी टॉर्च की रोशनी से नहीं डरा। वह सोमन के आगे आकर ठिठक गया। वह आगे का बायाँ पैर बार-बार उठा रहा था। सोमन की माँ ने डरकर उसके आगे कुछ केले रख दिए। हाथी ने उन केलों की तरफ देखा तक नहीं। अब सोमन को पक्का विश्वास हो गया कि हाथी के पैर में कोई चोट लगी होगी। वह साहस के साथ उठा और टॉर्च की रोशनी से हाथी के पैर के नीचे देखा। उसका संदेह सच निकला। वहाँ लोहे

की एक कील का छोर दिख रहा था जहाँ से खून झर रहे थे।

उधर, सोमन की माँ उसे बार-बार भागने के लिए इशारा कर रही थी। सोमन के समझाने पर उसकी माँ ने टॉर्च पकड़ी और सोमन ने कील को जोर लगाकर खींचा तो हाथी जोर से चिंघाड़ा, और साथ ही कील भी बाहर निकल गई। सोमन की माँ तो डर के मारे चिल्लाकर भागी। अब सोमन ने बाल्टी में पानी लाकर उसके घाव धोए। फिर उसने आँगन में उगे बूटी के कुछ पत्ते तोड़े और उन्हें अपनी हथेली पर रगड़कर घाव में भर दिया। अब हाथी ने उन केलों को खाया और बाल्टी से पानी पिया। अब उसने सूँड़ उठाकर हवा में ऐसे लहराया मानो कह रहा हो, सोमन, तुमने मुझ पर बहुत बड़ा उपकार किया है। फिर वह जंगल की ओर मुड़ गया। जाते हुए उसने कई बार पीछे मुड़-मुड़कर देखा भी।

हाथी के चले जाने पर सारे लोग सोमन को घेरकर खड़े हो गए और सारी बातें पूछने लगे। जब सोमन ने सारी बातें कह सुनाईं तो लोगों ने दाँतों तले उँगली दबा ली।

कुछ दिन गुजर गए और लोग भी इस घटना को भूलने लगे थे। खेतों में धान पकने लगे थे और फसल की कटाई का मौसम शुरू हो गया था। एक सुबह लोगों ने देखा कि एक खेत के कुछ हिस्सों में धान के पौधे काटने के बजाय उखाड़कर ले जाये गए थे। फसल खास रौंदे हुए भी न थे। लोगों ने खोजबीन की तो जमीन पर पड़े दो-चार पौधों को देखते हुए सोमन की झोंपड़ी तक आ पहुँचे।

झोंपड़ी के छप्पड़ पर धान के पौधे पड़े थे। लोगों ने पूछताछ की तो सोमन की माँ ने बताया कि हमें कुछ नहीं मालूम। लोग धान के पौधे समेटकर ले गए। दूसरे दिन फिर सोमन की झोंपड़ी के छप्पड़ पर धान के पौधे पाये गए। अब सच्चाई का पता लगाने के लिए लोगों ने रात को पहरेदारी की तो देखा कि कोई हाथी अपनी सूँड़ पर धान के पौधे लपेटे हुए आया और सोमन की झोंपड़ी के छप्पड़ पर उन्हें रखकर चलने लगा। सोमन और उसकी माँ ने उस हाथी को टॉर्च की रोशनी में देखा तो उसे तुरंत पहचान लिया; वह हाथी कोई और नहीं, वही था जिसका उपचार सोमन ने किया था। सबको यह समझते देर न लगी कि हाथी उस पर किये गए उपकार का बदला चुका रहा है।

आनंदलोक मॉडल स्कूल
गुरियाहाटी
कूचविहार-736101
(पश्चिम बंगाल)

A Voice That Reached Us

Bibhuprasad Mohapatra

"A voice reaches us, crying out from the depths of a profound silence: "I am alive, I can think, and no one has the right to deny me these two realities…"

These motivational words were conveyed by a flicker of the left eyelid and come from a truly extraordinary book, *Le Scaphandre et le papillon* (French name of *The Deep-Sea Diver and the Butterfly*) by a former journalist, author and editor, Jean-Dominique Bauby (23 April 1952 - 9 March 1997). He worked for journals like the *Quotidien de Paris* and *Paris Match*. He was the very successful chief editor of fashion magazine *Elle* for four years until 7th December 1995. He had two children with Sylvie de la Rochefoucauld, a son named Theophile and a daughter named Celeste.

For him, 8th December of 1995, was a black day on which the unthinkable happened. A massive and catastrophic cardiovascular stroke paralyzed him and put him into a deep coma. His mouth, arms, and legs were paralyzed, and he lost 60 pounds (27 kg) in the first 20 weeks after his stroke.

The stroke made him entirely speechless; he could only blink his left eyelid. When he woke up 20 days later in the Hospital Maritime at Berck, on the north-east coast of France, he was diagnosed as suffering from the rare disease called 'Locked-in Syndrome', unable to breathe, swallow or eat without assistance. 'Locked-in Syndrome' is a condition wherein the mental faculties remain intact but most of the body is paralyzed. Though his brain was intact and sound, but was only able to blink his left eyelid. His body was useless but still painful.

Calamity turned him into a connoisseur of irony and eeriness. In this inert body, the brain was working furiously. The author cultivated strong feelings, especially anger with a mixture of rage, exasperation and wild humour, trying to make people understand what he was thinking.

With the help of a specialized nurse, Claude Mendibil, dispatched by the publisher Robert Laffont, he was able to write his book, using only his ability to blink at the most frequently used letters of the alphabet - E, S, A, R, I, N, T and so on, while she pointed to them on a screen: one blink for "yes", two blinks for "no".

He would spend most of the night

editing his thoughts and composing sentences, which he memorized so that when she arrived in the morning he could dictate the latest instalment to her in a succession of blinks.

To make dictation more efficient, his interlocutor, Mendibil, listed the letters in accordance with their frequency in the French language. By moving his left eyelid in response to an alphabet rearranged according to the letters' frequency of use, he managed to write a book as any composed by the wheelchair-bound theoretical physicist, Cosmologist Stephen Hawking.

"It is a simple enough system," he explains, "You read off the alphabet… until, with a blink of my eye, I stop you at the letter to be noted. The maneuver is repeated for the letters that follow, so that fairly soon you have a whole word. Fairly soon! Less soon when the amanuensis was asked what I wanted to do with the moon (lune)."

The man's courageous spirit and the passionate tracking of a good story were combined in this supreme journalistic effort to produce a book whose vivid title describes the immobile state of his body (the deep-sea diver in one of those heavy old-fashioned diving suits) and the state of his mind, fluttering like a rare butterfly from letter to letter, from word to word, page to page to the end of a book of just over 100 pages.

He is also in search of past time, of the books he has read, the poems he learnt by heart; even more sad, he thinks of all the books he wanted to read and hadn't read. He has to listen to someone else reading them to him. He remembers

a bet he lost at a race track, one of the many flashes of wry humour in his book. Above all, he remembers his life as a journalist, as an editor, with its agonies and disappointments, his sense of being exploited by the media, yet his desire, in his post as editor of *Elle*, to do something for the rights of women, to help them free themselves from various tyrannies.

All this is admirably conveyed in a documentary about Bauby's last year made with scrupulous care and great sensitivity by Jean-Jacques Beineix, already programmed before his death to be shown on the weekly literary television program *Bouillon de Culture*, directed by Bernard Pivot. Pivot says 'he became a real actor, eager to make the film work perfectly.'

Despite his pity condition, he would not give up. His determination to overcome difficulties that would send most of us into irretrievable depths of despair are expressed in the words: "I have decided to carry on my fight against fatality by setting up the first association in the world for people suffering from Locked-In Syndrome. So he created ALIS (Association du Locked-In Syndrome) and became its first president stating his objectives thus: "To collect all the present information about the syndrome, to allow sufferers to communicate better with one another, to create means of breaking the solitude and isolation, and to make them true citizens of the 21st century."

In 2007, painter-director Julian Schnabel released a film version of *The Diving Bell and the Butterfly*. It starred actor Mathieu Amalric as Bauby. The film received many awards and nominations including the Best Director Prize at Cannes Film Festival and the Golden Globe Award for Best Foreign Language Film and Best Director, as well as four Academy Award nominations.

Jean-Jacques Beineix directed a short documentary film about Bauby's time at Berck-sur-Mer, which was released in 1997. The film features Bauby himself, as well as appearances by his interlocutor, Mandibil, and his partner, Florence Ben Sadoun.

During the book's composition, his long-term prognosis was uncertain. He was though likely to experience some improvement with digestion and respiration, and perhaps even to reach a point where he might "muster enough breath to make my vocal cords vibrate." The book was published in French on 6th March 1997. He died suddenly from pneumonia three days after the publication of his book, and is buried in a family grave at the Pere-Lachaise cemetery in Paris, France.

Rayagada Head Post Office
Rayagada-765001 (Odisha)

मुर्गा बाँग लगाए क्यों?

वीणा श्रीवास्तव

बात बहुत पुरानी है। बहुत ही सुंदर-सा एक जंगल था। उस जंगल में हर तरह के जानवर व जीव-जंतु रहते थे। सभी बड़े प्रेम से रहते व आपस में मिल-जुलकर काम करते थे।

एक बार ऐसा हुआ कि पानी नहीं बरसा। जंगल के सभी नदी-नाले, तालाब, तलैया-झीलें आदि सूख गईं। जंगल में पानी की एक बूँद भी न बची। प्यास के मारे सारे जंगल निवासी जानवर छटपटाने लगे। बिना पानी के सबको जान का खतरा हो गया। कुछ जानवरों व पक्षियों को पानी की खोज में भेजा गया, किंतु कहीं पानी नहीं मिला। सब चिंतित हो उठे कि अब क्या करें?

एक सभा बुलाई गई। उस सभा में जंगल के सारे जानवर इकट्ठे हुए। सभा में पानी के प्रबंध के लिए विचार हुआ। काफी विचार करने पर सबने तय किया कि एक कुआँ खोदा जाए। कुआँ खोदने में जंगल के सभी जानवरों से सहयोग करने को कहा गया।

सभा के निर्णय के अनुसार बड़े-बुजुर्गों ने नदी के पास जंगल में एक उपयुक्त स्थान का चयन किया और कुआँ खोदने का काम शुरू कर दिया गया। जंगल के सभी जानवर व जीव-जंतु अपनी-अपनी सामर्थ्य के अनुसार काम में जुट गए। सबके सहयोग से कुआँ का काम जोरों से चल पड़ा।

किंतु उन सबमें एक प्राणी, मुर्गा, ऐसा था, जो बड़ा आलसी था। वह कुछ भी करना अपनी हेठी समझता था। उसने जंगल निवासियों को कुआँ खोदते देखा तो उपहास के स्वर में कहने लगा, "अरे, तुम सब यह क्या बेवकूफी करते हो? तुमलोग बेकार मेहनत करते हो। भला

कहीं मिट्टी खोदने से पानी निकलता है? तुम सबकी मेहनत बेकार जाएगी। छोड़ो इस व्यर्थ के काम को!"

मुर्गे की हतोत्साहित करने वाली बातें सबने सुनीं तो उन्हें बड़ा गुस्सा आया। समय की गंभीरता की वजह से उस समय कोई कुछ नहीं बोला। सब अपना काम शांति से करते रहे। कुआँ खोदने का काम धीरे-धीरे प्रगति पर हो चला। ज्यों-ज्यों काम बढ़ता जाता, सबका उत्साह दुगना होता जाता।

आखिर एक दिन सबकी मेहनत रंग लाई। कुआँ जब कुछ और गहराई तक खुदा तो उसमें पानी दिखलाई पड़ने लगा। अब तो सबकी खुशी का ठिकाना न रहा। पानी क्या मिल गया, जैसे अमृत प्राप्त हो गया। सबने जी भरकर पानी पिया और अपनी प्यास बुझाई। आज के बाद से उनके दुख के दिन समाप्त हो गए।

उधर, उस आलसी मुर्गे ने यह चमत्कार देखा तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। पानी के बिना उसकी भी हालत खराब थी। वह अपने आप को रोक न सका और पानी पीने के लिए कुएँ की ओर बढ़ा।

ज्यों ही उसने कुएँ की जगत पर अपना पैर रखा, अन्य जानवरों ने उसे रोक दिया और कहा, "हम तुम्हें अपने कुएँ से पानी नहीं पीने देंगे। तुमने मेहनत नहीं की, इसलिए पानी पीने का तुम्हारा अधिकार नहीं है।"

मुर्गा भौंचक्का रह गया। प्यास से उसका गला सूख रहा था। वह हताश हो गया और गिड़गिड़ाकर बोला, "भाइयो, मैं प्यास से मर रहा

हूँ। मुझे पानी पी लेने दो, वरना मैं मर जाऊँगा। आपलोग जो चाहें, मुझे दंड दे दें।"

जानवरों व पशु-पक्षियों ने मुर्गे की हालत पर तरस खाकर आपस में विचार-विमर्श किया और उससे कहा, "हम तुम्हें इस कुएँ से पानी पीने देंगे, लेकिन हमारी एक शर्त है।"

"बोलिए क्या है?" दीन स्वर में मुर्गा बोला।

"शर्त यह है कि यदि तुम इस कुएँ का पानी पिओगे तो तुम्हें हम सबको रोज सवेरे आवाज देकर उठाना पड़ेगा। बोलो! तैयार हो?" सब लोगों ने मिलकर एक साथ कहा।

"ठीक है, जैसा आपलोग कहेंगे, मैं करूँगा। लेकिन मुझे पानी पी लेने दीजिए।" मुर्गा बोला।

मुर्गे को पानी पीने दिया गया। और, तबसे रोज वह सवेरे बाँग देकर सबको उठाता है। अपने किए की सजा वह आज तक भुगत रहा है।

सी-1/72, विशेषखंड, गोमतीनगर
लखनऊ-226010, (उ.प्र.)

Decoding Happiness

Srihari Nayak

Ram was ill. The attending doctor had lost his hope. He was sinking. The end may come at any time. Doctor had advised to pray for God's blessings. He was lying on the bed. He called his only son, Raghu. When he came, the father told him that his end is certain. Raghu felt helpless. He asked his father to advice him about what he should do after his death?

The father said, "Do not worry my son. There would be no problem for you. You will live happily. You should do four things after my death. Firstly— you should drink water in the middle of the tank. Secondly — you set up a market in our land. Thirdly — you should eat only the heads of the fish. Lastly — if you face any problem go to your uncle for advice and solution".

Raghu's father died after some days. Raghu performed last rites of his father. Then he started implementing his father's advice. He constructed a bamboo

bridge upto the middle of the tank in his campus area and brought water from there for drinking. Then he set up a market on the land available in his campus. He bought big fishes from the market and enjoyed eating them.

Gradually, he faced extreme want of money to manage the family expenses. Unable to find any solution, he went to his uncle for his advice as his father had told him to follow.

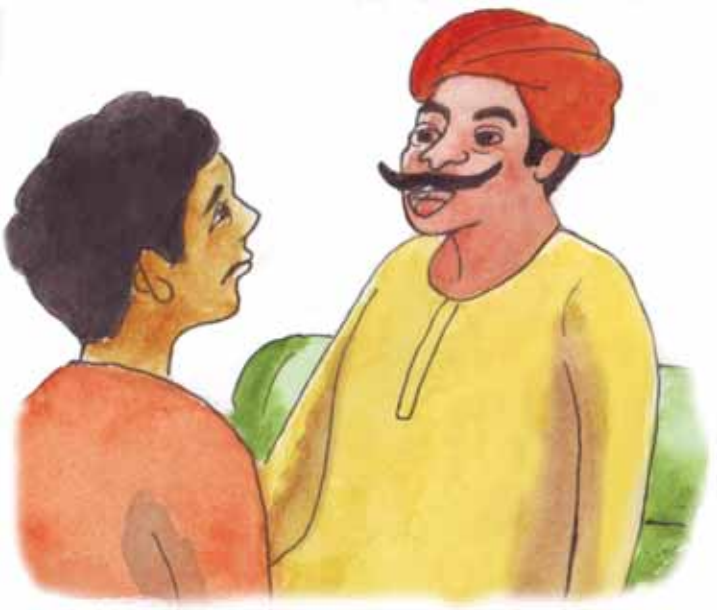

When he saw his nephew Raghu, he was very happy. He asked him about his problem. Raghu narrated what he had done following the last advice of his father.

The uncle said, "Raghu, you have not understood the advice of your father. That you would drink water from the middle of the tank was not his advice. He had indicated that you should drink water while you took your food so that there would be no problem while swallowing the food."

"As regards setting up a market in your home land, he actually meant to cultivate all kinds of vegetables in your campus so that you would not have to go to the market to purchase your needs rather you might go to market to sell your surplus vegetables after your consumption."

"You have completely misunderstood his advice about eating heads of fish. The advice was to eat small fishes so that you would get adequate nutrients for your good health. When you eat heads of big fish, you eat only flesh not bones which are rich in calcium, and they are costly also. By misunderstanding the advice of your father, you have suffered financially.

Raghu understood. He was happy with uncle's interpretation. He dismantled the market and bridge up to the middle of the tank. He started cultivation of vegetables in his campus, bought small fish and reared them in his tank and lived happily with his family.

D-II-61, Kaka Nagar
New Delhi - 110003

छोड़ दी शरारत

संदीप कपूर

राजू अपनी शैतानियों के कारण पूरे मुहल्ले में मशहूर था। वह कभी किसी के घर का शीशा गेंद से तोड़ देता तो कभी सोहन माली के बगीचे में चोरी-छिपे घुसकर फलों को तोड़ लेता। उसकी शरारतों की वजह से आए दिन उसके माता-पिता को लोगों की शिकायतें सुननी पड़ती थीं।

एक दिन राजू काफी दूर से सड़क के सामने वाले पेड़ पर बैठे पक्षियों पर अपना निशाना साधने की कोशिश कर रहा था, पर उसका निशाना सही नहीं बैठ रहा था। झेंपकर उसने एक पत्थर उठाया और पेड़ पर खींचकर दे मारा। पेड़ की शाखा से टकराकर वह पत्थर नीचे से गुजर रहे एक राहगीर के सिर पर जा लगा।

''ठहर जा शैतान, मुझे पत्थर मारता है! तुझे अभी सबक सिखाता हूँ!''

चिल्लाते हुए वह राजू के पास पहुँचा और उसके गाल पर एक चाँटा रसीद कर दिया।

राजू गाल सहलाते हुए घर आ गया। उसकी रोनी सूरत देखकर माँ ने पूछा, ''क्यों, आज फिर किसी से मार खाकर आया है?''

राजू ने नजरें झुका लीं। माँ उसके करीब आकर बोलीं, ''बेटा, तुम शरारतें छोड़ क्यों नहीं देते? तुम्हारे कारण हमें लोगों से कितना भला-बुरा सुनना पड़ता है।'' थोड़ा रुककर वह आगे

बोलीं, ''बेटा, अपना पूरा ध्यान पढ़ाई में लगाओ। अच्छा काम करो। अच्छा बनने की कोशिश करो।'' राजू को माँ की बातें बहुत भली लगीं। वह बोला, ''ठीक है माँ, मैं शरारतें छोड़ने की पूरी कोशिश करूँगा।''

''शाबाश! अब जाओ, हाथ-मुँह धोकर भोजन कर लो।'' माँ ने प्यार से उसका चेहरा सहलाते हुए कहा।

शाम को जब राजू टहलने के लिए पार्क में गया तो उसने एक स्थान पर कुछ बच्चे देखे। उत्सुकतावश वह भी वहाँ पहुँचा तो दंग रह गया। एक छोटा-सा बच्चा घास पर बैठा रो रहा था और उसके सामने कुछ ही दूरी पर एक काला साँप फन काढ़े बैठा था। उसके इर्द-गिर्द कुछ बच्चे चुपचाप सहमे खड़े थे।

राजू ने उस बच्चे की शक्ल देखी तो चौंक पड़ा, ''अरे, यह तो हमारे पड़ोसी प्रताप चाचा का बेटा है! न जाने वह इसे छोड़कर कहाँ चले गए हैं? मुझे इसकी जान बचानी होगी! लेकिन कैसे?''

उसने एक पल सोचा। फिर तेजी से भागकर झाड़ी से एक ऐसी मजबूत टहनी तोड़ लाया जिसकी एक तरफ से दो गुलेलनुमा शाखाएँ थीं। अब वह दबे पाँव साँप के पीछे पहुँच गया। वहाँ खड़े बच्चों से दूर हटने को कहकर उसने टहनी को ऊपर उठाया।

अकलमंदी का सबूत देते हुए राजू ने फुर्ती से टहनी का गुलेलनुमा हिस्सा साँप की गरदन पर जमा दिया। साँप टहनी की दोनों शाखाओं के बीच आ गया। इससे पहले कि वह वहाँ से निकल भागता, राजू ने लपककर उसकी पूँछ को पकड़ा और हवा में चक्कर देते हुए उसे दूर फेंक दिया।

साँप दूर जाकर गिरा और बुरी तरह से घायल हो गया। तभी प्रताप चाचा और उनकी पत्नी वहाँ पहुँच गए। सारी बात जानकर वे बहुत खुश हुए। उन्होंने राजू के घर जाकर भी उसके साहस व होशियारी की तारीफ की।

रात को पापा के घर लौटते ही राजू ने गर्व से पार्क की घटना उन्हें सुनाई। सारा किस्सा सुन पापा ने चकित हो कहा, ''शाबाश बेटा! आज तुमने बहुत अच्छा काम किया है। मुझे तुम पर नाज है।''

तभी माँ भी वहाँ पहुँचकर बोलीं, ''बेटा, तुम्हारी शरारतों के कारण तुम्हें हर किसी से डाँट खानी पड़ती थी, लेकिन जब तुमने अच्छा काम किया तो सब कितने प्रसन्न हैं। सारे मुहल्ले में आज तुम्हारी बहादुरी की चर्चा हो रही है।''

*

* *

* * *

88/1395, बलदेव नगर
अंबाला सिटी-134007 (हरियाणा)

छुट्टियाँ रंग-बिरंगी

संगीता सेटी

नेहा को छुट्टियों में अपनी नानी के घर जाना बेहद पसंद था। खाना, पीना, खेलना और सोना ही उसके प्रिय शगल थे। पिछले साल तो उसके मामा की शादी में ही छुट्टियाँ बीत गई थीं। इस बार तो नई मामी के साथ छुट्टियाँ बिताएगी। अहा! कितना मजा आएगा। उसका छोटा भाई भोलू भी खुश था। वो तो बस वहाँ गुल्ली-डंडा ही खेलेगा। छुक-छुक गाड़ी चल पड़ी थी देहरादून की पहाड़ियों की तरफ।

भोलू और नेहा खुश थे कि इस बार तो मामी भी होगी नानी के घर। नेहा ने मम्मी से सुना है कि मामी को पिज्जा-बर्गर खूब अच्छा बनाना आता है। भोलू सोच रहा था कि वो तो मामी से नूडल्स खाने की फरमाइश करेगा। दोनों के मुँह में पानी आ रहा था। इतने में मम्मी ने आलू-पूड़ी निकालकर दिया। भोलू ने बुरा-सा मुँह बनाया। नेहा ने कहा, ''आप भी मम्मा पुरानी फैशन के हो। पिज्जा नहीं ला सकते थे?'' नेहा की मम्मी ने खिसियानी हँसी हँसते हुए कहा, ''अपने शहर में इसका सामान नहीं मिलता। अब देहरादून में खाना।''

नानी के घर में तो मजे-ही-मजे थे। रात को भोलू और नेहा ने जमकर नींद ली। अब तो सारे दिन अपने थे। देर तक सोना और फिर दिनभर धमाचौकड़ी ने मामी को परेशान कर दिया था। खाने-पीने में नखरे उठाते-उठाते नानी भी थक गई थी। नेहा की मम्मी तो खाना खाकर सो जाती। इधर, मामी दिन में कभी पेंटिंग बनाती तो कभी क्रोशिए का काम करती। वो गुहार लगाती, "अरे निशा! अब सो भी जा। थक गई होगी।" उधर, नानी आवाज लगातीं, "तुम सो जाओ। यह नहीं सोएगी दिन में। यह तो जब तक अपना कोई काम नहीं कर लेती इसे चैन नहीं पड़ता।" मामी की इस आदत की वजह से नेहा और भोलू अब दोपहर में सड़क पर घूमने की बजाए मामी के इर्द-गिर्द ही रहते। कभी रंग की डिब्बी खोलकर देते तो कभी भोलू पानी लाकर देता। नेहा ब्रश को धो-धोकर तैयार रखती। मामी अपने में मगन कैनवास पर रंग चलाती जाती। जब मामी क्रोशिया बनाती तो भोलू धागे की गेंद बनाकर इधर-उधर लुढ़काता रहता। नेहा उसे समेटने का प्रयास करती।

एक दिन भोलू ने कहा, "मामी, मैं भी आपकी तरह पेंटिंग करूँगा।" नेहा बोली, "मुझे भी आपकी तरह क्रोशिया से लेस बनानी है। मैं उसे अपनी फ्रॉक पर लगाऊँगी।" मामी भी खुश थी। "हाँ, तुम्हें जरूर सिखाऊँगी। पर सब धीरे-धीरे सीखना होगा और हरी सब्जियाँ खानी पड़ेंगी। पिज्जा-बर्गर केवल रविवार को

मिलेगा।" नेहा और भोलू एक-दूसरे को देखते हुए हाँ-में-हाँ मिला रहे थे।

अगले दिन बच्चों को दोपहर का इंतजार था। नेहा ने मामी के साथ रसोई में मदद की और भोलू भाग-भागकर टेबल पर बरतन सजाने लगा। खाना खाने के बाद भी दोनों बच्चे मामी की मदद को तत्पर थे। वो मामी से कुछ सीखना चाहते थे।

सब खाना खाकर सोने चले गए तो मामी ने पुराने डिब्बे निकाले। पुराने कागज, कार्ड और गोंद लेकर बैठ गई। भोलू को कहा कि वह कैंची से डिब्बे के अनुसार कागज काटे। नेहा को कहा कि इन्हें डिब्बे पर चिपकाए। भोलू को ब्रश दिए और कहा, "इनसे डिब्बे पर मनचाहे रंगों से चित्र बना दो। लो, तुम्हारा होल्डर तैयार है। इसमें चाहे तो पेन रखो, कलर पेंसिल या मम्मी की रसोई में चम्मच के लिए काम में लो।"

शाम को जब सब सोकर उठे तो भोलू और नेहा अपने हाथ से बना होल्डर नानी-नाना, मम्मी और मामा को दिखा रहे थे। अब तो रोज ही भोलू और नेहा की दोपहरी मामी के साथ गुजरती। कभी पुरानी बोतल को पेंट करके गुलदान बनाया जाता तो कभी गत्ते के पुराने बॉक्स को गोटे-मोती से सजाकर नानी के लिए ज्वैलरी बॉक्स बनाया जाता। नेहा ने क्रोशिया सीख लिया था और अपनी फ्रॉक पर लेस भी लगा ली थी।

इन सब कामों के उत्साह में वे मामी के साथ मदद भी करने लगे थे। बाहर धूप में खेलना भी बंद हो गया था। नानी की सिरदर्दी भी कम हो गई थी।

भोलू और नेहा की छुट्टियाँ खत्म होने जा रही थीं। जब जाने का समय आया तो दोनों उदास हो गए। उनकी मम्मी निशा मामी के गले लगकर बोली, "तुमने तो मेरे बच्चों में कितना बदलाव ला दिया है। इस बार तो इनकी छुट्टियाँ सार्थक हो गईं।"

"हाँ! मामी, हमारी छुट्टियाँ इस बार रंग-बिरंगी बन गई हैं।" नेहा बोली तो मामी ने उसके गालों को चूम लिया और भोलू मामी के गले से झूल गया।

1/242, मुक्ता प्रसाद नगर
बीकानेर-334001
(राजस्थान)

My Page

Courageous Jhuma

Sribas Mondal

Once upon a time there lived a man at Akalipur. He had three daughters. They were Tumpa, Rumpa and Jhuma. Tumpa was the eldest daughter among them. She lived in her maternal uncle's home. Their father used to drink wine everyday and oppress their mother. For this matter one day, suddenly, his wife died by fire when Jhuma was very little. It was the first shock for the maidens. Then their father decided to get Tumpa married. Tumpa was married in a middle class family.

After few months, their father decided to get Rumpa married. She is compelled for child marriage. Then their father admitted Jhuma in Maa Bindhya Basini Primary School at Akalipur Village. She studied hard.

One night, Jhuma was studying at home and her father was sleeping. But her father died while sleeping. Jhuma did not anticipate that her father had died. The little girl slept while reading the books. And that night she did not eat anything. When she got up next morning, she saw her father sleeping. She did not wake her father up. She went to the school. When she came back from school, she noticed that her father was still sleeping.

She could not understand what the matter was. Then she called her uncle. And after sometime they all got to know that her father was no more. It was the second shock in her life. She became lonely. Her uncle and aunt did not accept her in this critical moment.

The villagers kept her in an orphange in Narayanpur in Birbhum District. There she spent her life. And when she grew older, the people of that locality decided for her marriage. But she did not want to marry. She wanted to be a good sports person. She became a good tennis player. Now, she is well know not only in India but also in the world. In her past life, nobody encouraged her and stood by her. But, now many people meet and praise her. She received the blessings of God.

Village Akalipur, PO-Bhadrapur
Distt. Birbhum
(West Bengal)

Book Review

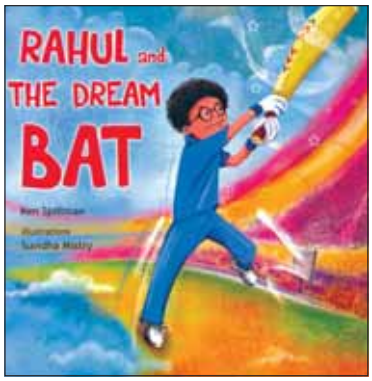

Rahul and The Dream Bat
Ken Spillman
Illustrated by *Suvidha Mistry*
National Book Trust, India
₹ 50/-

Rahul and The Dream Bat

Rahul loves to play cricket. But, he never scores runs from his bat. He is always out for duck. He is let down by his own poor performance. An old man helps him overcome his shortcomings. With old man's blessings, he gains confidence and starts scoring well.

Ken Spillman has written more than 45 books – more than half of them for children. He is the author of the popular *Jake* series and also created the *Daydreamer Dev* adventures.

Suvidha Mistry is a freelance illustrator with a passion for all forms of art.

जादुई द्वीप
जई व्हिटेकर
अनुवादः *मुरारी शरण*
चित्रः *अमिताभ सेनगुप्ता*
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
₹ 90/-

जादुई द्वीप

दक्षिण-पूर्व भारत का मुख्य भूमि से अलग हटकर बंगाल की खाड़ी में अवस्थित द्वीप-समूह अंडमान एवं निकोबार द्वीप-समूह प्रकृति की एक अद्‌भुत देन है। इस पुस्तक में इसे द्वीप-समूह के संबंध में बहुआयामी जानकारी दी गई है। हम इस पुस्तक को पढ़कर अंडमान के भूगोल, इतिहास, संस्कृति, कला आदि के साथ-साथ मुख्य भूमि के मनुष्यों के साथ मूल जनजातीय अंडमानी के संपर्क आदि के संबंध में व्यापक जानकारी पाते हैं।

R.N.I. No. -64771/96 Postal Regd. No-DL-SW-1-4066/2012-14
Licenced to post without prepayment, L. No. U (SW) 24/2012-14 Mailing Date: 20/21 Same Month
Date of Publication: 14/09/2014

ENSURE YOUR PARTICIPATION IN THE LARGEST INTERNATIONAL BOOK FAIR OF THE AFRO-ASIAN REGION

NEW DELHI WORLD BOOK FAIR

14 - 22 February 2015
Pragati Maidan

President of India Shri Pranab Mukherjee at the Inaugural address of NDWBF2014

Organiser
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार
NATIONAL BOOK TRUST, INDIA
Ministry of Human Resource Development
Government of India
Nehru Bhawan, 5 Institutional Area
Phase-II, Vasant Kunj, New Delhi-110 070 (India)
Phone: 91-11-26707700 • Fax: 91-11-26707846
Website: www.nbtindia.gov.in

facebook.com/nationalbooktrustindia
facebook.com/newdelhiworldbookfair

- Guest of Honour-Singapore
- Focus country-South Korea
- CEOSpeak
- New Delhi Rights Table
- Authors' Corner
- Theme Pavilion
- Cultural Programmes